ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

ध्रुव शंकर प्रसाद की कविताएँ

अंग्रेजी शिक्षक(TGT)
गिरिडीह, झारखण्ड
dhruwa12345@yahoo.com

साजिश

बात जो अनकही रह गई थी
गुम कहीं हो गई थी

सबको था ऐसा लगा
ख़ामोशी से है उसका रिश्ता भला

तन्हा लम्हों से मिलकर अनकही बात ने कब साजिश की पता न चला
वो तो बस संस्कार की चादर ताने सोया रहा

पर कागज़ पे उकेरे शब्द सारे बोल पड़े
कभी चुप आवाज़ों के साथ,कभी बोलती ख़ामोशी के साथ !

हमारी माँ

बीमार हम पड़ते हैं
चैन आपका खो जाता है,
चोट हम खाते हैं
अनुभव आपको हो जाता है,
जो हम कह नहीं पाते
मन आपका समझ जाता है,
पहले तो शरारतों पे हमारी
हमें समझाया जाता है,
जब बाज नहीं आते
धुलाई हमारी कर दी जाती है,
पर ये क्या! हमारी धुलाई के बाद
आप अक्सर रो पड़ती हैं,

हम समझ नहीं पाते आपको ये क्या हो जाता है!
लेकिन इतना समझ ज़रुर आता है,
हमारे बिना आप और
आपके बिना हम रह नहीं सकते
क्योंकि ममता और त्याग की मूरत हैं आप,
हमारे जीवन की बहुत बड़ी ज़रूरत हैं आप !!

भारत और महाशक्ति बनने की संभावना

अधिकांश कहते हैं
हमारे नेताओं की भ्रष्टाचार में लिप्तता है ,
हमारे पदाधिकारियों में निष्क्रियता है ,
देश में प्रचुरता में निर्धनता है ,
किन्तु मेरा विश्लेषण कहता है --------
शब्द पुराने हैं,
विचार पुराने हैं,
हम एक - सी आदतों में जीने लगे हैं,
नये विचार पसंद आते नहीं ,
दूसरों की कमियों को ढूँढने से फुर्सत पाते नहीं ,

अपने अंदर ईमानदारी से एक पल झाँकते नहीं ,
तथ्यात्मक आँकड़े साक्षी हैं,
हमारे राष्ट्र में संसाधनों का आभाव नहीं है ,
संसाधन चाहे प्राकृतिक हों या मानवीय
उनका समुचित दोहन होता नहीं है ,
किन्तु यह भी सही है
हमारे देश में ऐसा एक भी कारखाना नहीं है
जो बना सके ऐसी आँखों को जिनमें विकास के रंगीन सपने हों ,
जो बना सके ऐसे हृदयों को जो उत्कट राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत हों ,
जो बना सके ऐसे हाथों को जो उत्तरदायित्व पाने को सदा उत्साहित हों ,
जो बना सके ऐसे कदमों को जो राष्ट्रहित के पथ पर चलने को सदा तैयार हों ,
क्या इसमें हमारे अभियंताओं का दोष है या हमारे वैज्ञानिकों का ?
किन्तु ऐसा भी नहीं है
इनका निर्माण कारखाने से बाहर प्राकृतिक स्तर पर संभव नहीं है ,
गुजरते समय के साथ स्वयं बन जाएँगे
ऐसी आँखें, ऐसे हृदय, ऐसे हाथ और ऐसे कदम
अभीष्ट क्षमता के साथ में
दूरगामी राष्ट्रहित में ,
बस इस देश का हर नागरिक
एक बार ठान ले
अपने अंदर सोयी भारतीयता को जगा ले
अपना जीवन - दर्शन यह बना ले
दायित्व कोई भी हो -------
कृषक का हो या कृषि वैज्ञानिक का
श्रमिक का हो या वास्तुकार का
शिक्षक का हो या शैक्षिक नीति – निर्माता का
आदेशपाल का हो या प्रशासनिक पदाधिकारी का
निज विचार ,जाति, धर्म ,सम्प्रदाय से परे
वह एक राष्ट्रधर्म अपना ले ,
प्रत्येक पल , प्रत्येक कार्य में
भारतीयता की झलक हो ,
राष्ट्रभक्ति की महक हो ,
नवनिर्माण की तड़प हो
फिर चाहे प्रतिद्वंदी,
कोई एशियाई देश हो या पश्चिमी देश ,
कुछ दशकों में , विश्वमंच पर
हजारों वर्षों के चिंतन से प्राप्त जीवनदर्शन
और राष्ट्रहित की सुनियोजित कार्यशैली के दम पर ,
पुरानी परंपरा की पुनरावृति
भारत कर सकता है ,
एक बार फिर ,पथ – प्रदर्शक बन सकता है ,
और निसंदेह भारत महाशक्ति बन सकता है।

फ्राइडे इफ़ेक्ट

आज कोई फेस्टिवल नहीं है
बाल-मेला भी नहीं है
फिर भी सागर उमड़ पड़ा है उन बच्चों का
जो स्कूल आने से कतराते हैं
स्कूल न आने से सौ बहाने बनाते हैं
ईद का चाँद बने रहते हैं
सब गहरी नींद से आज जागे-जागे लगते हैं

बिन डांट खाये आज ये आए हैं
कुछ शरमाए हुए हैं

कुछ घबराए हुए हैं
कुछ ललचाये हुए हैं
कुछ संयम बनाए हुए हैं

उन बच्चों का क्या कहना !
जिनका स्कूल में एडमिशन भी नहीं है
उनकी खुशी की सीमा नहीं है
उनकी तो लॉटरी लगी है
बिन जतन के उनकी मुराद पूरी होने लगी है

छुप नहीं रही है उनकी उमंग
उमंग दीख रही है
इनकी आँखों में,इनकी आवाज़ में,इनकी प्रतीक्षा में

बस परेशान हैं, हैरान हैं आज----हेडमास्टर साहब !
ईद के चाँदों को देख कर !

क्योंकि आज परीक्षा है
उनके धैर्य की,उनके प्रबंधन कौशल की

उधर मासूम लबों पे चर्चा है
बस फ्रुट और एग की

क्योंकि आज एपल डे है, एग डे है
आज फ्राइडे है !

ईश्वर का न्याय

चोरी करने पर सजा मिलती है
संपत्ति हड़पने पर सजा मिलती है
हत्या करने पर सजा मिलती है
देशद्रोह करने पर सजा मिलती है
ईंट की ईमारत के कारीगर को भी गलती पर सजा मिलती है

किन्तु सामाजिक विडम्बना है
जीवन की ईमारत की बुनियाद जाने-अनजाने बिगाड़ देने पर
सजा नहीं मिलती !

आज जब जीवनयात्रा में
24 मील तय कर चुका हूँ
मुड़कर देखता हूँ

रोम-रोम आज भी सिहर उठता है
सोया दर्द जाग जाता है
कल, आज भी पल-पल अनुभव हो जाता है

गलती किसी और की थी
जो बाल-मस्तिष्क से समझ न सका
समझा न सका

दर्द झेलती खामोशी को
उन्होंने दुस्साहस समझ लिया
और सचिन से भी तेज शतक
उन्होंने मेरी हथेली पर जड़ दिया

खामोशी चीखती रही----
"बेकसूर हूँ, बच्चा हूँ, इसलिये मजबूर हूँ मै"

वो छड़ी, वो गुस्से भरी आँखें

फिर सामना न हो मेरा उनसे
दूर नजरें बचाकर कक्षा में बैठता रहा
ये बात और है
महीनों उनके गुस्से का पारा चढ़ता रहा

एक दिन, हाँ एक दिन लम्बे समय बाद अचानक
जब यह राज मालूम उन्हें हुआ
वो पत्र किसी और ने लिखा था
तब भी उनके चेहरे पर अपराध-बोध न था
मेरे मन में हर दिन उठते तूफ़ान का उन्हें एहसास न था

इत्तिफाक है आज
शिक्षक हूँ मैं भी
इस पेशे में हमेशा रहूँगा या नहीं
मालूम नहीं मुझे
पर इतना जरुर मालूम है मुझे

घर हो, पड़ोस हो, विद्यालय हो- कोई भी जगह
हर बच्चा जो मेरे संपर्क में आता है
उसकी मासूम सोच,रंग-बिरंगी दुनिया,
नासमझी भरी गलती,परियों-सी कल्पना

बड़े होकर बड़े काम करने के बड़े सपने
मन में छुपे डर,आँखों की उम्मीद,क़दमों की चंचलता
बड़ों से झिझक, गुस्सेवाले से डर
समझने वाले से प्यार, उनपर सवालों की बौछार
इन सबको हर दिन समझना अच्छा लगता है मुझे

शायद शतक वाली शिक्षिका की जगह शिक्षक बन
वर्गकक्ष में सहमे हर सुधांशु को समझने की कोशिश
कर रहा हूँ मैं
अतीत को बदलने की चाह में
भविष्य को अनायास बदल रहा हूँ मैं ।